उपसंहार

उपसंहार

समाज और परिवार सदैव व्यक्तिगत रूप से सृजनकर्ता परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार प्रभाव डालता है। प्राय: समाज के भीतर व्यक्ति और परिवार को अनूकुल प्रतिकूल परिस्थितियों में नैतिकता और जीवन मूल्यों, विसंगतियों, विडम्बनाओं और उनके परिणाम इन सबको अनुभव के आधार पर भोगना ही पड़ता है। कहने का तात्पर्य हर्ष, वेदना, पीड़ा एवं प्रेम सभी व्यक्ति के चरित्र को और उसके द्वारा किये गये सृजन को पूर्णरूपेण प्रभावित करते हैं। समाज एवं व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं को अनुभव के आधार पर शिल्प व शैली के माध्यम से लेखक या कवि प्रस्तुत करता है। भोगा हुआ यर्थाथ, कटु यर्थाथ सभी उसके व्यक्तित्व और उसके सृजन पर पूर्णतया: गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। परिवेश, समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक या राष्ट्रीय चेतना का हो सभी पर प्रभाव आवश्यक पड़ता है।

राजी सेठ के कथा साहित्य में व्यक्त कथ्य और शिल्प के विषय के अन्तर्गत विषय चमन से लेकर विषय परिसीमन एवं विषय अनुक्रम देते हुये उनकी विचारधारा और लेखन पर शोधपरक दृष्टि से विश्लेषण और परिणाम देखने का प्रयास किया गया है।

प्राय: 'कथ्य' से अभिप्राय: अमुक घटनाक्रम से है जिसे कथ्य की संज्ञा दी जाती है और इस कथ्य का सीधा सम्बन्ध वस्तु से गुंफित रहता है। दूसरे शब्दों में कथा-वस्तु को ही कथ्य का पर्याय स्वीकार कर लेना ही श्रेष्ठकर है। विद्वानों का मानना है कि मानक हिन्दी कोश के अनुसार 'कथ्य' शब्द 'संस्कृत' की 'कथ' धातु में 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से बना है जिसका सामान्य अर्थ कहने से है अर्थात् जो कहने योग्य है, वही कथ्य है। "जो कहना उचित हो, वो कथ्य है।" इसी परिभाषा को श्यामसुन्दर दास ने भी अभिव्यक्त किया है। यहाँ मात्र योग्य कथन से ही अभिप्राय है और श्यामसुन्दर ने कुछ भी कह देने को 'कथ्य' नहीं स्वीकारा हिन्दी साहित्य जगत में कथ्य के लिये ''वर्णनीय, कथ-कथनीय, वचनीय तथा वर्ण्य आदि शब्दों के पर्याय उपलब्ध होते हैं। वेट जैसे विद्वानों ने वैद्य, उपयुक्त, अपेक्षित जैसे शब्दों को कथन के परिप्रेक्ष्य में स्वीकारा है। 'अमरकोष' में भी 'वाक्य-विस्तार' की कल्पना वाले ग्रंथ का नाम कथा कहा गया है। जिसके भीतर कथा-वस्तु का योग रहता है।

कहानी अथवा उपन्यास की रचना प्रक्रिया के दो मूलभूत आधार होते हैं संवेदना और शिल्प। संवेदना लेखक के व्यक्तित्व को लेकर मनोवैज्ञानिक आधार पर उसके

इन्द्रियबोध का परिचायक है और अमूक इन्द्रियबोध की अभिव्यक्ति ही शिल्प है। कोई भी लेखक कथ्य के प्रतिपाद्यय को लेकर परिवर्तित मनःस्थितियों से प्रमाणित होकर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक परिवेश के कथ्य को जिस प्रकार से चित्रित करता है वहीं उसके शिल्प का परिचायक होता है। समाज का भले ही वर्ग कोई हो निम्न, मध्य अथवा उच्च अर्न्तविरोधों का निर्वाह किस प्रकार से समाज के भीतर हो रहा हो अचेतन, अवचेतन और चेतन अवधारणाओं को लेकर जिस प्रकार की अभिव्यक्ति लेखक शब्दिक चित्रण के माध्यम से अभिव्यक्ति करता है वही शिल्प की परिसीमाओं में स्वीकारा जाता है। उपरोक्त मंथन से स्पष्ट है कि शिल्प के अन्तर्गत कथावस्तु, पात्र, एवं चरित्र चित्रण, भाषा शैली, देश-काल और वातावरण, संवाद सम्प्रेषण की प्रक्रिया तथा उद्देश्य जैसे तत्व शैली के प्रमुख तत्वों के आधार पर स्वीकार किये जाते हैं। यहाँ यह विवेचन अतिश्योक्ति नहीं कि कहानीकार अपनी कहानी के कथ्य के भीतर अपने अनुभवों को जिन माध्यमों को लेकर अभिव्यक्त करता है वही शिल्प के विधान के अन्तर्गत आता है। विद्वानों का मानना है कि शिल्प के परिवेश में वे तत्व स्वीकार्य हैं जिनका सांकेतिक वर्णन निदृष्ट किया गया है। शिल्प के कलात्मक निर्वाह के लिये देवशिल्प, चौंसठ कलायें, कला कौशल तथा नृत्य एवं संगीत का कला पक्ष प्रायः मनुस्मृति, कौषीतकी, इनसाइक्लोपीडिया, ब्रिटेनिका आदि में अपने-अपने प्रयोगजन्य स्वाभाविक अर्थों में इधर मौनियर विलियम, हस्त कला, यान्त्रिक या ललित कला तथा नृत्य कला से शिल्प को जोड़ते हुये दिखाई देते हैं। वस्तुतः शिल्प सम्बन्धी लाक्षणिक परिभाषाओं के मंथन से स्पष्ट होता है कि शिल्प का क्षेत्र व्यापक है जिसका निरूपण कथा वस्तु के तात्विक परिवेश में ही समझा जा सकता है।

'सत्यपाल चुघ' विधि से शिल्प का संबद्ध जोड़ते हैं जबकि 'जैनेन्द्र कुमार शिल्प के कलेवर की उपयोगिता को स्वीकार करते हैं। भाषा, शैली, संवाद योजना प्रतीक व बिम्ब जैसे तत्वों को शिल्प के अन्तर्गत ज्वाहर सिंह ने स्वीकारा है 'सफी उल्लाह अंसारी' शिल्प के लिये मनोवेगों की अभिव्यक्ति को प्राथमिकता देते हैं। धूर्तता, कौशल, दक्षता, कला आदि तत्वों का समावेश विलियम गौडीय भी स्वीकारते हैं। भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा सम्प्रेषित शैली की परिभाषाओं का निरूपण कहाँ तक राजी सेठ ने अपने समग्र कृतित्व के भीतर प्रयुक्त किया है वह कथा वस्तु की तात्विक कसौटी पर कितना खरा उतरता है इसका विश्लेषण करने से पूर्व राजी सेठ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सारगर्भित विवेचन की प्रस्तुति अनिवार्य हो जाती है जिसका चित्रण शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम भाग में चित्रित किया है, जबकि इसी अध्याय के द्वितीय चरण में उनके कृतित्व को लेकर सारगर्भित चित्रण प्रस्तुत किया गया

है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा निर्धारित कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन, उनकी रचनाओं में किस प्रकार से अभिव्यक्त हुआ है इसका उल्लेख द्वितीय अध्याय में वर्णित है। जहाँ तक समाज और धर्म के परिप्रेक्ष्य में राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्ति दी है उसका सम्पूर्ण चित्रण तीसरे अध्याय का प्रतिपाद्य रहा है। आर्थिक और राजनैतिक सन्दर्भों की मीमांसा चतुर्थ अध्याय में विवेचित की गई है। सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक विवेचन शोध के पाँचवे अध्याय का विषय है। इन सभी प्रतिपाद्यों से हटकर राजी सेठ के कथा साहित्य में व्यक्त शिल्प का निरूपण छठे अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पर राजी सेठ के कथा साहित्य में कथ्य और शिल्प को लेकर भूमिका के अतिरिक्त जिन छः अध्यायों में राजी सेठ के समस्त रचना संसार को अभिव्यक्त किया गया है। उन सभी अध्यायों के तथ्यपरक सार अधोलिखित है।

गौरवमयी व्यक्तित्व की पारदर्शी लेखिका राजी सेठ का जन्म उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रदेश नौशहरा छावनी में 4 अक्तुबर 1935 में एक सम्पन्न क्षेत्रीय परिवार में हुआ। भाग्य की विडम्बना के अमुक प्रतिभा सम्पन्न लेखिका राजी सेठ के शैक्षिणिक संयोग के समय भारत-पाक विभाजन के परिप्रेक्ष्य में जो विषैला वातावरण तद्युगीन फिजाओं में घुलमिल रहा था स्वाभाविक है कि उन प्रतिकूल परिस्थितियों का प्रभाव राजी सेठ के जीवन पर अंकुरित हुआ जिसे प्रतिकूल परिस्थितियों के परिवेश के कारण राजी सेठ को झेलने पर विवश होना पड़ा। वस्तुतः भारत-पाक विभाजन के साथ जिन विघटनकारी घटनाओं से राजी सेठ का प्रारम्भिक कौमार्य अवस्था का जीवन प्रभावित हुआ निःसंदेह उसकी छाप राजी सेठ के व्यक्तित्व पर स्पष्टतः परिलक्षित होती दिखाई देती है। निःसंदेह अर्थाभाव में संघर्षरत परिवार जहाँ एक ओर जीवन यापन के लिये जीजिविषा के निमित संघर्ष का सामना कर रहा था वहाँ दूसरी ओर सामाजिक परिवेश से जुड़े कुछ अनुबंद्ध सगाट रूप से राजी सेठ की शिक्षा को प्रभावित कर रहे थे। सौभाग्यवश राजी सेठ के पिता प्रारम्भ से ही स्वभावतः देशभक्त, स्वाभिमानी आदर्शोन्मुख, सुधारवादी स्वःदधायी तथा स्वतन्त्र चिंतक थे फलतः पैत्री प्रदत्त संस्कारों की कहीं ना कहीं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष छाप यत्र-तत्र राजी सेठ के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व में मुखरित होती हुई दिखाई देती है। 1955 में स्नातकोत्तर शिक्षा के लिये संघर्ष और सामंती परम्परा की गरिमा में 1957 में प्रणय सूत्रों का गठबन्धन की समसामयिक परिस्थितियों ने भी इनके व्यक्तित्व को प्रमाणित किया और उस समय को नया प्रतीक, धर्मयुग कहानी जैसी मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिये अज्ञेय, गिरजा कुमार माथुर तथा देवराज जैसे स्थापित सशक्त हस्ताक्षरों से सान्धिय प्राप्त हुआ। समाज के

भीतर महिला की किसी भी क्षेत्र में अविस्मरणीय भूमिका रही है और स्वयं भी नारी होने के कारण समाज के भीतर जिन मानसिक अर्न्तद्वन्द्वों और संघर्षों को भोगे हुये पलों के यर्थात् पर अपने जीवन से परिस्थितियों के वशीभूत होकर समझौता किया शत्-प्रतिशत उन सभी कटीले अनुभवों का प्रतिबिम्ब उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बबित हुआ है। यह राजी सेठ के कर्मठ कृतित्व का ही प्रभाव है कि अपने समाज के भीतर जिन समस्याओं को लेकर कहानी जगत में उनकी पैठ बनी यह उसका ही प्रतिफल है कि उन्हें हिन्दी कहानी जगत में अनेकों पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित किया गया जिसका विस्तृत उल्लेख प्रथम अध्याय में किया जा चुका है।

इतना ही नहीं जर्मन के कवि राइनरे मारिया रिल्के, दिनेश शुक्ल, इकेदा जैसे विदेशी साहित्यकारों की बहुचर्चित रचनाओं का हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत करने में समक्ष रही हैं। राजी सेठ के कृतित्व के मंथन से यह कहा जा सकता है कि भले ही उनके समक्ष प्रतिकूल परिस्थितियाँ रही परन्तु किसी भी मूल्य पर उन्होंने संघर्षों और चुनोतियों की उपेक्षा नहीं की, मात्र कहानी जगत में अपनी लगन और मेहनत से एक अलग पहचान बनाने में सफल रही। यहाँ यह कहना भी तर्कसम्वत् होगा कि उन्होंने अपने कृतित्व में जिन संवेदनाओं को लेकर एक अनूठी तड़प के साथ प्रभावशाली ढंग से अपनी कहानियों में तिरोहित किया है वे तभी तत्व राजी सेठ के व्यक्तित्व को और भी आकर्षक एवं प्रभावित बनाते हैं जिसका मूल कारण यह है कि उन्होंने निःसन्देह समसामयिक जीवन को पीड़ाओं, संघर्षों, विघटित जीवन मूल्यों, पुरानी रूढ़ियों, आडम्बरों और विद्रोह के लिये अपने लेखन में जिन नये मूल्यों की स्थापना की है प्रायः वे राजी सेठ के व्यक्तित्व और कृतित्व को लेखकीय जगत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की ओर आकर्षित करती हुई दिखाई देती हैं। कुल मिलाकर यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि राजी सेठ ने अपने रचना संसार में कथ्य की सार्थकता को खोजा है, शिल्प की अवधारणाओं पर सैद्धान्तिक रूप से विवेचन प्रस्तुत किया है और पाठकों की मनःस्थिति के साथ तादात्म्य स्थापित करने में सफल रही हैं।

साहित्य जगत में किसी भी रचनाकार को अपनी पहचान बनाने के लिये यह अनिवार्य हो जाता है कि वह अपनी रचना के लिये कथ्य और शिल्प की सैद्धान्तिक विश्लेषण की परिसीमाओं में रहकर ही विद्वानों द्वारा निर्धारित तत्वों के आधार पर ही अपनी रचना की जाँच एवं परख करे। जहाँ तक कथ्य का प्रश्न है विद्वानों द्वारा निर्धारित कथ्य के सैद्धान्तिक विवेचन उसकी सामान्य अवधारणाओं को लेकर राजी सेठ ने अपने समग्र कहानी रचना संसार तथा उपन्यासों के भीतर चर्चित कथ्य के सैद्धान्तिक

पक्षों का विश्लेषण करने से पूर्व निश्चित रूप से राजी सेठ ने कथ्य का अर्थ उसके स्वरूप और कहानी और कथ्य के परस्परिक सम्बन्धों को अपनी रचनाओं में शत्प्रतिशत इस प्रकार से चित्रित किया है के पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों द्वारा निर्धारित कथ्य के तत्वों को लेकर उसी के अंग विशेष के रूप में घटनाक्रमों को लेकर आद्यांत एक-दूसरे के पूरक से बनते हुये दिखाई देते हैं। राजी सेठ के कहानी जगत में सर्वोपरि यह विशेषता है कि वे किसी भी मूल्य पर सैद्धान्तिक पक्ष की विवेचना के अन्तर्गत ना तो अस्वीकारे जा सकते हैं और न ही उन्हें सैद्धान्तिक विश्लेषण से अलग किया जा सकता है। प्राय: यही स्पष्टीकरण राजी सेठ ने कहानी जगत के भीतर अपनी रचनाओं को जन्मति समय प्रयुक्त किया है कि शिल्प के विभिन्न निर्धारित अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं तत्वों के प्रयोग को सर्वथा अपनी रचना करते समय उन्होंने ध्यान में रखते हुये शिल्प के सभी अनिवार्य तत्वों का प्रतिपादन यत्र-तत्र अपनी रचनाओं में किया है जिस का विशेष उल्लेख एवं विस्तृत विवेचन पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका है।

राजी सेठ ने जहाँ अपनी रचनओं में कथ्य और शिल्प के सैद्धान्तिक विश्लेषण का तर्कसम्वत् चित्रण किया है वहाँ दूसरी ओर राजी सेठ ने अपने कहानी रचना संसार के प्रतिपाद्य में सामाजिक एवं धार्मिक सन्दर्भों के दृष्टांत भी यथोपरि प्रस्तुत किये हैं। राजी सेठ के व्यक्तित्व के मंथन से स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है कि उनका दीर्घअन्तराल जिन संघर्षों एवं अन्तर्द्वन्द्वों को लेकर चित्रित हुआ उनमें सामाजिक घटनाक्रमों को लेकर कटु यर्थात को परिलक्षित करते हुये दृष्टांतों को अभिव्यक्त करने में राजी सेठ अत्यधिक सफल रही हैं। सामाजिक सन्दर्भों को लेकर अन्धे मोड़ से आगे कहानी में पति-पत्नी सम्बन्ध; पिता-पुत्रों के सम्बन्धों का चित्रण, तीसरी हथेली में सास-बहु की कड़वाहट एवं झेलते तनाव उनकी यह कहानी नहीं के भीतर टटोले जा सकते हैं। राजी सेठ ने अपनी समग्र रचनाओं में पारिवारिक सम्बन्धों के सभी रिश्तों-नातों को किसी न किसी कथ्य के रूप में अपनी कहानियों के भीतर स्थान दिया है। उनके समग्र कथा-साहित्य में पति-पत्नी के खट्टे-मीठे सम्बन्धों, सास-बहु की झुंझलाहट, भाई-बहन के मधुर सम्बन्ध, माँ-बेटों को लेकर अत्मीयता का गठबन्धन तथा पिता-पुत्र के जिन सम्बन्धों को लेकर राजी सेठ ने जिस किसी भी कहानी में सामाजिक सन्दर्भों को चित्रित किया है उनसे यह तथ्य तो उजागर होते ही हैं कि मध्यवर्गीय परिवार के भीतर सामाजिक रिश्तों के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार की विडम्बनायें भीतर ही भीतर एक-दूसरे पात्रों के मन में प्रस्फुटित होती रहती हैं जिससे की पात्रों को या तो उन प्रतिकूल परिस्थितियों में समझौता कर लेना होता है अथवा समाज के भीतर घटनाक्रमों के जन्मते परिवेश के भीतर घुट-घुट कर जीवन निर्वाह के लिये

तिल-तिल कर जीना होता है। परिवारिक सम्बन्धों को लेकर राजी सेठ ने उन सभी कथा के अनुबन्धों की परोक्ष की तुलना में उनके प्रत्यक्ष स्वरूप को चित्रित करने के लिये एक कटु यथार्थ को प्राथमिकता दी है। कथा परिवेश से जुड़े सामाजिक सन्दर्भों का चित्रण कहीं न कहीं भीतर ही भीतर उनके व्यक्तिगत स्वरूप से जुड़े व्यवहारिक जीवन के निजी अभिव्यक्ति को लेकर सापेक्ष मुखरित होते हुये दिखाई देते हैं जिससे लगता है कि राजी सेठ के पात्र नहीं उनके चारित्रिक रंग मूल एवं सांकेतिक भाषा में ही समाज के सन्दर्भों की पूरी तरह से अभिव्यक्ति करने की क्षमता रखते हैं।

परिवार के इतर सम्बन्धों से जुड़ी कुछ सामाजिक समस्याओं का निरूपण भी राजी सेठ ने अपनी कुछ कहानियों में सापेक्ष चित्रित किया है। प्राय: तद्युगीन समाज उच्च, मध्य तथा निम्न वर्ग की त्रिकोणी सीमांत रेखाओं को लेकर जब भी उभर कर सामने आता है तो उसमें अमीर-गरीब से जुड़ी समस्याओं का चित्रण समाज के भीतर, भीतर-ही-भीतर मधुर सम्बन्धों को खोखला कर देने का तनाव नारी शोषण की हृदय विदारक समस्याओं का चित्रण तथा मांसल हवस के लिये शारीरिक भूख की तृप्ति की आकांक्षा से पुरुष तथा नारी के मध्य सम्बन्धों के चित्रण की समस्या भी राजी सेठ की लेखनी के लिये किसी चुनौती से कम नहीं थी जिसका उन्होंने अपनी रचनाओं में भोगे हुये पलों के धरातल पर समाज की तथ्य परक कड़वी सच्चाईयों को पाठकों के समक्ष उकेरने में सफलता अर्जित की है।

भले ही राजी सेठ का कथा संसार सामाजिक परिवेश से जुड़ा हो जिसमें अधिकांश पारिवारिक सम्बन्ध छिन-भिन्न होते हुये दिखाई देते हो अथवा उन सम्बन्धों की नैसर्गिकता को लेकर तद्युगीन समाज की समस्याये, इन सबका राजी सेठ ने हृदय विदारक एवं मार्मिक चित्रण करके कहानी की सशक्त हस्ताक्षरों में अपनी पैठ बनाई है।

राजी सेठ ने परिवार के न केवल इतर सम्बन्धों का चित्रण यथार्थ रूप में किया सामाजिक समस्याओं के निरूपण में ही उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी का परिचय दिया, अपितु समाज के भीतर धर्म की आड़ में लेकर उस समय जो कुछ भी विघटित हो रहा था उन धार्मिक सन्दर्भों का चित्रण भी उनके साहित्य की सृजनात्मक उपलब्धि का अन्यत्र उदाहरण स्वीकार किया जा सकता है। प्राय: पाश्चात्य विद्वानों द्वारा निर्धारित धर्म, अर्थ उसकी परिभाषा धर्म के स्वरूप एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में धर्म की उपादेयता को लेकर राजी सेठ ने अपनी कहानियों में यथेष्ट चित्रण किया है। इतना ही नहीं समाज के भीतर प्रचलित परम्परागत धार्मिक मान्यताओं, धर्म से सम्बन्धित तद्युगीन प्रचलित प्रथाएं और धर्म के प्रति अस्तित्वबोध को लेकर समाज भीतर पूजा-पाठ की प्रविधि का पात्रों द्वारा क्षिण अंधविश्वास एवं धार्मिक रूढ़ियों से जुड़े यत्र-तत्र कथानक तथा पाप

और पुण्य के झूलों में झूलते हुये परिवार के पात्र समाज के भीतर एक अलग-थलग धार्मिक अवधारणा के प्रति संकेत करते हुये दिखाई देते हैं जिसके चित्रण का निर्वाह राजी सेठ ने धार्मिक चेतना के तत्वों के आधार पर शत-प्रतिशत चित्रित किया है। मूलत: तृतीय अध्याय के मंथन से स्पष्ट है कि राजी सेठ के कथा साहित्य में अभिव्यक्ति सामाजिक एवं धार्मिक घटनाओं का चित्रण ही है जो राजी सेठ के कथा संसार को एक सशक्त आधार प्रदान करते हुये उन्हें कहानीकारों के मूधर्न्य लेखकों ने स्थान ग्रहण करवाने के उत्तरदायित्व को निभाता है।

आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं को किसी भी मूल्य पर समाज से अलग नहीं किया जा सकता। समाज को जिस प्रकार पारिवारिक सम्बन्ध और उनसे जुड़ी समस्याये पात्रों को प्रभावित करती हैं, धर्म की आड़ में कैसे जीजिविषा की चक्की में पात्र पिस्ता हुआ दिखाई देता है, इसके अतिरिक्त आर्थिक तथा राजनीतिक सन्दर्भों के अनेकों उदाहरण राजी सेठ के समग्र कथा साहित्य में उपलब्ध होते हैं। अर्थ की परिभाषा एवं स्वरूप, अर्थ और समाज के तादात्म्यता के घनिष्ट सम्बन्ध, दिन दैन्य जीवन से सम्बन्ध, दैन्य दृश्यों का चित्रण, आर्थिक की लहरी पर प्रलोभन के प्रश्न चिन्ह अर्थ को लेकर पात्रों के मध्य पनपती हुई महत्वाकांक्षाए और आर्थिक वैषम्य पर हिचकोले खाते हुये कथा के पात्रों के भोगे हुये संस्मरण राजी सेठ की कहानियों में जहाँ एक ओर परिलक्षित होते हुये दिखाई देते हैं वहाँ दूसरी ओर अर्थ को लेकर आर्थिक वैषम्य के कारण जिन अर्थिक समस्याओं का चित्रण राजी सेठ ने अपनी कहानियों में किया है उनमें अंधे मोड़ से आगे, तीसरी हथेली, दूसरे देशकाल में, यह कहानी नहीं, गमें हयात ने मारा तथा उपन्यास तत्सम तथा निष्कवच आदि में भी जिन मूलभूत आर्थिक समस्याओं का चित्रण हुआ है उसमें आर्थिक पराधीनता को मुखरित करती हुई नारी शोषण की व्यथा, बेरोजगारी को बर्बस झेलने की व्यवस्था, आश्रित वर्ग के लिये दुर्व्यवहार की दयनीय परिस्थितियाँ तथा इन सभी समस्याओं के बीच निम्न परिवार के लिये गरीबी के नासुर का मन को कचोटने वाला चित्रण राजी सेठ के समग्र लेखन चाहे वह कहानियों से संबद्ध हो अथवा उपन्यास के हृदय विदारक दृष्टांतों के कलेवर से प्राय: वे आर्थिक समस्याओं को लेकर अपनी व्यथा को अपने में ही समेटने हुये से दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं आर्थिक समस्याओं के ज्वलंत प्रश्नों के पार्श्व में कहीं ना कहीं राजी सेठ के राजनीतिक सन्दर्भ भी कहानी के पात्रों की करुणा जन्म स्थिति को मुखरित करते हुये दिखाई देते हैं।

राजनीतिक सन्दर्भों के निमित भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने राजनीतिक सन्दर्भों को लेकर जिन अर्थों को ग्रहण किया है, जिन परिभाषाओं को स्वीकारा है,

राजनीति के जिस स्वरूप को मान्यता दी है, उन सभी तत्वों का निरूपण राजी सेठ ने तद्युगीन समाज के देशकाल और वातावरण को लेकर अपनी रचनाओं में यर्थाथ रूप से प्रतिबिम्बित किया है, फिर भला वे सम्बन्ध पात्रों के भ्रष्टाचार से संलिप्त हो अथवा राजनीतिक गलियारों में शिक्षा और राजनितिक व्यवस्था पर गहरी चोट करते हो अथवा नारी और राजनिति की बात करते हो। इन सभी विवेच्य बिन्दुओं पर राजी सेठ की सशक्त लेखनी ने उनकी एक अलग पहचान बनाई है। जहाँ एक ओर नारी के प्रति राजी सेठ ने अपने अनुभवों के परिदृश्य राजनीतिक मंच का प्रयोग विभिन्न राजनीतिक सम्बन्धों को लेकर किया है वहाँ दूसरी ओर नारी शक्ति के प्रति उनकी लेखनी भी नारी सशक्तिकरण की चिंगारियाँ भी प्रस्फुटित होते हुये दिखाई देती हैं। इतिहास साक्षी है कि अबला नारी आँचल में दूध और आँखों में पानी समेटे हुये पुरुष समाज के भीतर भले ही अपने आप को गौण समझ रही हो परन्तु ऐसी बात नहीं। राजी सेठ की कहानियों में नारी जागरण के बहुमूल्य दृष्टांत और अपने अधिकारों के अधिग्रहण के लिये संघर्ष की चेतनात्मक चिंगारियाँ भी नारी पात्रों के माध्यम से राजी सेठ ने अभिव्यक्ति की है। राजी सेठ ने नारी जीवन से संबद्ध उन सन्दर्भों का भी अपनी कहानियों में चित्रित किया है जिनका सीधा सम्बन्ध लालच, अस्थिरता, काला बाजारी और नैतिकता से अवमूल्यन का शिकार है। विवेचित बिंदु किस प्रकार से नारी के सुखमय जीवन को यत्र-तत्र तिरोहित करके रख देते हैं उन सन्दर्भों का मार्मिक चित्रण राजी सेठ ने अपनी कथा साहित्य में किस प्रकार से गुंफित किया है कि वे प्रभावित पात्रों के प्रति पाठकों की सवीकृति अर्जित कर ही लेती है।

राजी सेठ के कथा साहित्य में कथ्य और शिल्प का शोधपरक विवेचन शोध की चरम सीमा के परिवेश के लिये पाँचवे अध्याय में चित्रित किया गया है। प्राय: सामाजिक परिवेश से संबद्ध राजी सेठ के समग्र कथा संसार में यदि कथ्य के सांस्कृतिक एवं मनोविज्ञानिक सन्दर्भों की अभिव्यक्ति न हो तो शोध का स्वाभाविक निर्धारित मूल्य ही नहीं रह जाता। अत: राजी सेठ की समग्र साहित्य में कथ्य के सांस्कृतिक जीवन मूल्यों और मनोवैज्ञानिक संचेतनाओं के निरूपण को ध्यान में रखते हुये राजी सेठ ने संस्कृति से सम्बद्ध अर्थ, परिभाषा, स्वरूप संस्कृति और साहित्य से संबद्ध संस्कृति और समाज का चित्रण कथा जगत में पात्रों द्वारा निरूपित संस्कृति के आन्तरिक पक्ष के अन्तर्गत करूणा, ममता, सहनशीलता, परोपकार तथा संस्कृति के बाह्य पक्ष के मध्यस्थ वेश-भूषा, खान-पान, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा पात्रों द्वारा जीवन संघर्ष के चित्रण के साथ सांस्कृतिक मूल्यों के बदलते हुये स्वरूपों को जिस पैनी दृष्टि से राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य में सजृत पात्रों के माध्यम से संजोया है वह कहानी जगत

के अन्य चर्चित कहानिकारों की तुलना में सर्वोपरि और उत्कृष्ट दिखाई देता है। राजी सेठ के अधिकांश पात्रों में जहाँ करूणा और ममता की संवेदना मुखरित करती हुई दिखाई देती है वहाँ सहनशीलता और परोपकार के सन्दर्भों को पात्रों के माध्यम से यथेष्ट कलेवर को समक्ष रखते हुये चित्रित करना राजी सेठ नहीं भूली है। प्राय: देशकाल और वातावरण की तद्युगीन परिस्थितियों के मंथन से पता चलता है कि राजी सेठ ने अपने कथा परिवेश को उजागर करते हुये समसामयिक वेशभूषा, खान-पान, रीति-रिवाज और रहन-सहन के उन दुर्लभ दृष्टांतों को अपने बुने हुये पात्रों के माध्यम से इस प्रकार सृजित किया है कि वे किसी भी मूल्य पर यर्थाथ से अलग हटकर ना तो समझे ही जा सकते हैं ना उनके बारे में सोचा जा सकता है। उनकी अधिकांश कहानियों में पात्रों के जीवन से संबद्ध जिन सांस्कृतिक मूल्यों के बदलते हुये स्वरूपों को राजी सेठ ने पात्रों के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है वे स्वत: ही जीवन के संघर्षों को चुनौती उकेरते हुये दिखाई देते हैं और यह कहना यहाँ अतिश्योक्ति नहीं कि राजी सेठ ने अलग-अलग कथा प्रतिपाद्य के मध्य घटनाक्रमों को लेकर जिस संघर्ष को जिया है वे तद्युगीन समाज के यर्थाथ परिदृश्य को प्रस्फुटित करते हुये दिखाई देते हैं।

प्राय: जीवन संघर्ष और सांस्कृतिक मूल्यों का सापेक्ष सम्बद्ध राजी सेठ द्वारा बहुचर्चित पात्रों को लेकर मनोविज्ञान से भी जुड़ा है। जिस समय राजी सेठ का कथा संसार उद्भव से विकास की ओर विभिन्न कथाओं को लेकर अंकुरित हो रहा था स्वभाविक है कि राजी सेठ कहानी के पात्रों के सशक्त चरित्र-चित्रण के लिये मनोविज्ञान की उपादेयता को स्वीकारना भी नहीं भूली। अत: उन्होंने मनोविज्ञान के अर्थ परिभाषा और स्वरूप के सम्बन्ध में जिन मनोविज्ञानिकों द्वारा संबद्ध विषयों के तथ्यों के निरूपण का मंथन किया, मनोविज्ञान एवं साहित्य की परिभाषा को समझा बूझा तथा मानवीय मूल्यों के विघटन के लिये अपने कथा निर्मित पात्रों के लिये जिस घुटन, तनाव, अलगाव, निराशा, कुंठा, विवशता, अंतर्द्वन्द्व, सम्बन्धों में घात-प्रतिघात और अनैतिकता का चित्रण राजी सेठ ने किया वे अमूक विवेचित बिन्दुओं के लिये अंधे मोड़ से आगे, तीसरी हथेली, दूसरे देशकाल में, यह कहानी नहीं, यात्रा मुक्त, गमें हयात ने मारा, खाली लिफाफा आदि तथा उपन्यास के कथानकों में पात्रों के यत्र-तत्र चित्रण में मुखरित होते हुये दिखाई देते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार को लेकर अलगाव, खालीपन, ऊब, अकेलापान, अजनबीपन, द्वन्द्व, मानसिक तनाव और संत्रास बोध की ओर संकेत करते हुये राजी सेठ ने अपने पात्रों का सशक्त चारित्रिक विकास प्रस्तुत करके अपने कथा साहित्य को कालजयी बना दिया है।

कथा साहित्य की संरचना के लिये कहानीकार को कथा के भीतर होने वाले शिल्प का निर्वाह और साहित्य में व्यक्त शैली को चित्रित करने की क्षमता होनी चाहिए प्राय: शिल्प और शैली का निर्वाहन किसी भी कथाकार को कहानी जगत में चमतकृत कर सकता है अस्तु राजी सेठ के कथा सहित्य में व्यक्त शिल्प और शैली के निरूपण के लिये सारगर्भित विवेचन छठे अध्याय में सारगर्भित रूप से निरूपित करने पर इस तथ्य पर पहुँचा जा सकता है कि कहानी के कलेवरों को घटते समय राजी सेठ ने शिल्प और शैली विधान के तत्वों का यथेष्ट स्वरूप चित्रित किया है। मूलत: जब भी शिल्प की अभिव्यक्ति का प्रश्न होता है उसमें भाषा और भाषा के अन्तर्गत वाक्य विन्यास, शब्द प्रयोग, तत्सम, तद्भव, स्थानीय शब्दावली, आँचलिक, ग्रामीण शब्द, देशज विदेशज, उर्दू, पंजाबी, फारसी के शब्दों के निरूपण के अतिरिक्त पात्रों के लिये प्रयुक्त कहानी संरचना के वाक्य विन्यास, संवाद सम्प्रेषण वाक्यों में प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों का समीचीन प्रयोग ही शिल्प विधान के विशेष तत्वों में समाहित किया जा सकता है। शिल्प विधान को लेकर जहाँ तक राजी सेठ के समग्र साहित्य का चिन्तन है अमूक परिवेश में यह स्वीकारना अतिश्योक्ति ना होगा कि राजी सेठ ने अपने सभी रचनाओं में विद्वानों द्वारा निर्धारित शिल्प विधान के तत्वों का यथेष्ठ निरूपण किया है। उनके समग्र कथा साहित्य के मंथन के परिप्रेक्ष्य में जब शिल्प का प्रश्न मस्तिष्क में उभरता है तो लगता है कि राजी सेठ ने सरल-सरस स्वाभाविक वाक्य विन्यासों की संरचना करके पात्रों के माध्यम से किसी भी कथा को निरन्तर लक्ष्य की ओर प्रभावित करने में महारत अर्जित की है। देश-काल और वातावरण को ध्यान में रखते हुये सारगर्भित वाक्य विन्यास के अन्तर्गत राजी सेठ का समग्र कथा सहित्य समृद्ध है। वाक्य विन्यास को लेकर यदि पात्रों के माध्यम से नि:सारेत संवादों की परख करें तो वे भी मूल कथा के जीवंत स्वरूप को ज्ञापित करते हुये दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं वाक्य विन्यास हो अथवा पात्रों के नि:सारेत संवाद उनमें न केवल प्रचलित लाकोक्तियों और मुहावरों का खुलकर प्रयोग हुआ है अपितु सभी कहानियों के पठन-पाठन से ऐसा आभास होता है कि सभी कहानियों का प्रतिपाद्य चलचित्र की भांति, मानसपटल पर अमिट छाप छोड़ता हुआ न केवल दिखाई देता है, अपितु कथा-वस्तु को लेकर जैसा देश वैसा भेष को परिभाषित करने वाले वाक्य विन्यास, संवाद, लोकोक्तियाँ और मुहावरे भी राजी सेठ के कथा साहित्य के शिल्प विधान को आर्कषक बनाते हैं।

कथा साहित्य की संरचना में शैली तत्व के निरूपण का एक अलग ही महत्त्व होता है जो ना केवल कथा के सम्प्रेषण को रोचक बनाता है अपितु पाठकों के लिये हृदयग्राही भी होता है। साहित्य जगत में कथा में प्रयुक्त जिन शैलियों को विद्वानों ने

स्वीकारा है उनमें आत्मकथात्मक, विवरणात्मक, सांकेतिक, प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक, चित्रात्मक आदि विभिन्न शैलियों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त उपन्यास अथवा दीर्घ कथाओं के सम्प्रेषण में मूल कथा के साथ अन्य कथाओं का समावेश इस लिये भी किया जा सकता है कि उसमें कथा में प्रयुक्त पात्रों के चरित्र-चित्रण का खुलकर चित्रण किया जा सके। कभी-कभी तो लेखक अपनी रचनाओं में पूर्वदीप्ति, पत्रात्मक और डायरी जैसी शैलियों के प्रयोग से भी नहीं चूकता।

अत: जहाँ तक राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रयुक्त अमूक शैलियों के प्रयोग का संबद्ध है यत्र-तत्र, जाने-अनजाने अथवा स्वाभाविक रूप से लगभग सभी निर्देशित शैलियों का प्रयोग राजी सेठ के समग्र कथा साहित्य में यत्र-तत्र उपलब्ध हो ही जाता है। तात्विक दृष्टि से राजी सेठ ने जिस अनुभूति, जन्य विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न कहानियों में जहाँ-जहाँ भी अलग-अलग शैलियों को पात्रों के लिये चित्रित किया है उसका प्रभाव पात्रों के स्वाभाविक चरित्र-चित्रण पर अंकित होता हुआ दिखाई देता है। शिल्प तथा शैली के प्रयोग में राजी सेठ का समग्र कथा साहित्य एक परिपक्व, पुष्ट श्रेणी में रखे जाने का गौरव प्राप्त करता हुआ दिखाई देता है।

हिन्दी साहित्य जगत के लिये यह गौरव का विषय है कि राजी सेठ का रचना संसार ना केवल कहानियों, उपन्यासों और अनुवादों की सृजन प्रक्रिया तक ही सीमित है अपितु वे निरन्तर काल प्रवाह के साथ सृजनशीलता के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते हुये हिन्दी साहित्य जगत को हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, सस्मरण, पत्र लेखन, डायरी आदि विषयों पर अपनी लेखनी का प्रवाह निरन्तर बनाये हुये हैं। जहाँ तक राजी सेठ के कथा साहित्य में कथ्य और शिल्प के शोध को लेकर शोधार्थी का तात्विक निष्कर्ष है उस परिप्रेक्ष्य में यह कहना समीचीन है कि राजी सेठ ने प्रतिकूल परिस्थितियों में चिन्तन और मनन को लेकर जिस सजीव लेखन को उद्भावित किया है उससे राजी सेठ के व्यक्तित्व को पूरी तरह से समझ सकने की क्षमता सर्वग्राह्य है। वे जिस समाज के भीतर रही, अपने आस-पास देशकाल और वातावरण को लेकर जिन घटनाओं से प्रभावित हुई, प्राय: उन्हीं भोगे हुये पलों को अपनी विभिन्न कहानियों तथा उपन्यासों के पात्रों की सर्जना करके अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को अभिव्यक्त किया। लेखन के प्रति मन वचन एवं कर्म की भावना से समर्पित राजी सेठ का रचना संसार हिन्दी साहित्य जगत को काल प्रवाह के साथ निरन्तर समृद्ध करता हुआ दिखाई देता है। इनके समग्र साहित्य के मंथन से यही निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा सकता है कि निकट भविष्य में हिन्दी साहित्य जगत को राजी सेठ द्वारा कालजयी रचनायें उपलब्ध हो तथा राजी सेठ के सम्पूर्ण कथा साहित्य में

कथ्य और शिल्प को विभिन्न सन्दर्भों में, विभिन्न सृजत कृतियों में उनके अनुभव और तद्युगीन परिस्थितियों का परिवेक्षण एवं शोधपरक दृष्टिकोण से प्रयास महत्त्वपूर्ण रहा जिसमें समाज, परिवार, राष्ट्र, संस्कृति मनोविज्ञान, धर्म के विभिन्न पात्र सृजित कर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भाषा की सम्प्रेषणीयता को ध्यान में रखते हुये विभिन्न प्रकार के शब्दों का, वाक्यों का, लोकोक्तियों का, मुहावरों का, शैलियों का सहारा लेकर सुन्दर उपलब्धी, मार्गदर्शक दृष्टिकोण समाज के लिये उभर कर सामने आया है। समाज में रहने वाली आम या साधारण परिवार इन समस्याओं से जो नैतिकता और मूल्यों के विघटन से सम्बन्धित समस्याओं से अनभिज्ञ है उन तक ऐसी कथ्य-कहानी और उपन्यास के माध्यम से समाज के भीतर के पात्रों को लेकर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर परिवार, समाज, राष्ट्र एवं व्यक्ति की अन्तर्मन की भावनाओं को सहजता से प्रस्तुत कर आज के सन्दर्भ में सृजन को नये आयाम देने का उत्तरदायित्य बखूबी निभाया है।